ऑनलाइन पाठ्य सामग्री

वर्ग — स्नातक प्रथम वर्ष (प्रतिष्ठा)
सत्र — 2020-23
पत्र — प्रथम
शीर्षक : नाथ साहित्य का दार्शनिक पक्ष

नाथ साहित्य का दार्शनिक पक्ष

दार्शनिक दृष्टि से नाथ साहित्य शैव दर्शन पर अवलंबित है, तथा व्यावहारिक रूप से यह महर्षि पतंजलि के योग सूत्र पर आधारित है। शिव को विश्व का निर्विकार तत्व माना गया है। शिव की इच्छा ही 'शक्ति' कहलाती है। प्रलय की अवस्था में यह शक्ति परमशिव में 'तत्वरूप' होकर रहती है। जब शिव को सृष्टि की रचना की इच्छा होती है तब वे साकार हो जाते हैं। शिव और शक्ति सृष्टि के मूल कारण हैं। यही कारण है कि शिव की यह शक्ति सृष्टि के प्रत्येक परमाणु में व्याप्त है। नाथ मार्गी का मानना है कि शक्ति कुण्डलिनी रूप में व्यक्ति के शरीर में अवस्थित रहती है। इस शक्ति को इच्छा, क्रिया और ज्ञान के रूप में अनुभव किया जा सकता है। शक्ति की साधना का प्रधान साधन काया (पिण्ड) है।

योगमार्गी का मानना है कि संपूर्ण दृश्यमान जगत दो भागों में विभक्त है— समष्टि और व्यष्टि। 'व्यष्टि' समष्टि का लघु रूप है। उसमें समष्टि के समस्त गुण व्याप्त रहते हैं। इस प्रकार यह काया (शरीर) ब्रह्माण्ड (समष्टि) का ही लघु रूप है। जिस प्रकार समस्त सृष्टि (समष्टि) की नियामक शक्ति होती है, उसी प्रकार यह काया (शरीर) व्यष्टि की नियामक 'कुण्डलिनी' (शक्ति) होती है। नाथ-पंथ हठयोग

का आश्रय ग्रहण करता है, 'ह' का अर्थ है 'सूर्य' और 'ठ' का अर्थ है चंद्रमा। सूर्य प्राणवायु का प्रतीक माना जाता है और चंद्रमा अपना वायु का। जब प्राण वायु और वायु दोनों का प्राणायाम द्वारा नियमन अथवा योग होता है तब इसी को हठयोग कहा जाता है। वस्तुतः हठयोग शरीर-शुद्धि की श्रेष्ठ प्रक्रिया है। जब साधक हठ-योग द्वारा शरीर में कुण्डलिनी स्थित शक्ति को जाग्रत कर उसका अनुभव करता है तो वह पिण्ड में ही ब्रह्मांड का अनुभव कर लेता है। साधारण व्यक्ति की कुण्डलिनी सुप्तावस्था में रहती है, योगी जन हठयोग के माध्यम से कुण्डलिनी को जाग्रत कर इस शक्ति का लाभ उठाता है। साधक की साधना से जब अग्नि चक्र में अवस्थित कुण्डलिनी जाग्रत होकर सहस्र कमल दल में पहुँचती है तो योगी परम शक्तिमान हो जाता है। सहस्रार को शून्य अथवा शिव भी कहा जाता है। इस प्रकार साधक कुण्डलिनी अवस्थित शक्ति को योग-साधना द्वारा जाग्रत कर, षट्चक्रों को भेदता हुआ अपनी शक्ति बढ़ाता हुआ शून्य (सहस्र दल) में अवस्थित शिव से मिलता है। जब शक्ति की शिव से समरसता होती है तब योगी को कैवल्य वाली समाधि मिल जाती है। इस समाधि में जो आनंद मिलता है, उससे बढ़कर और कोई आनंद नहीं होता। इस प्रकार नाथ-संप्रदायी साधक के लिए नाड़ियों, चक्रों आदि का ज्ञान होना

आवश्यक है। इसके अभाव में यह साधना-पथ पर अग्रसर नहीं हो सकते।

इस प्रकार नाथ सम्प्रदाय शैव दर्शन का आधार ग्रहण कर हठयोग के माध्यम से सहज-समाधि की अवस्था तक पहुँचकर परम आनंद की अनुभूति कराता है। इस सारी प्रक्रिया के लिए योग-मार्ग के निर्देशानुसार उसे सद्गुरु की कृपा और उससे निर्देश प्राप्त करना आवश्यक होता है। नाथों का मानना था कि शक्ति सृष्टि करती है, शिव पालन करते हैं, काल संहार करता है और नाथ मुक्ति दिलाते हैं। नाथ लोग पुस्तकीय ज्ञान पर विश्वास नहीं करते थे। वे सगुण निर्गुण से परे परमात्मा को महत्व देते हैं। नाथ अद्वैत की अवस्था को भी चरम नहीं मानते। उनके अनुसार 'परमानंद' वाली स्थिति अद्वैत से भी ऊपर है।

इन सिद्धांतों के अतिरिक्त मन की शुद्धता, और दृढ़ता, योग, वाक्य संयम, धैर्य, तीर्थों की निरर्थकता, सत्-आचरण की शुद्धता, नशीली वस्तुओं का त्याग, जगत के भीतर अमृत को प्राप्त करना, ब्रह्मचर्य, वीर्यसंयमन आदि बातों पर भी नाथों ने जोर दिया है।

डॉ० मीना कुमारी
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), हिन्दी
ए० पी० एस० एम० कॉलेज, बरौनी
ललित नारायण मिथिला विवि, दरभंगा।